बी०ए० पार्ट I

डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कालेज, आरा
M: 9204396227

हिन्दी रचना

प्रश्न: दिनकर की काव्य साधना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: हिन्दी के छायावादोत्तर काल के कवियों में दिनकर का नाम सबसे ऊपर आता है। दिनकर जी की कविताओं ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सामाजिक चेतना को जगाने काम किया है। उनकी कविता का मुख्य स्वर है- ओज और उमंग। उनकी कविताएँ जन-जन के हृदय में जोश भरने का काम करती हैं। उनकी कविताओं में छायावाद की निर्वैयक्तिकता की जगह क्रांतिकारिता को बल मिला है।

उन्होंने जिस कविता लिखना शुरु किया था वह भारतीय राजनीति में साम्यवादियों के प्रवेश का युग था। उस समय मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार कविता लिखना एक फैशन की तरह चल पड़ा था। इसमें मनुष्य की सामूहिक मुक्ति और एक नए मानववादी दर्शन की ओर मार्गों को प्रेरित करने का लक्ष्य था। दिनकर जी की शुरुआती रचनाओं में इस प्रकार के रुझान देखने को मिलते हैं। सबसे पहले इनकी कृति 'रेणुका' में इस प्रवृति के दर्शन होते हैं। इसके बाद 'हिमालय' शीर्षक कविता में क्रांति की भावना दिखलायी देती है जो शोषित समाज की तरफदारी करती है। शोषित समाज के प्रति उनकी सहानुभूति यूँ ही नहीं है, जब वह देखते हैं कि गरीब मजदूर-किसान अपनी हाड़-तोड़ मेहनत के बाद भी दो जून रोटी की व्यवस्था नहीं कर पाते, उनके बच्चे दूध के अभाव में दम तोड़ देते हैं, तब उनकी आत्मा हाहाकार कर उठती है। वह अपनी पूरी ताकत के साथ ऐसी व्यवस्था पर प्रश्न उठाते हैं और गरीब मजदूर-किसानों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं। उनके 'हिमालय' और 'हुंकार' नामक कविता में ऐसी ही वाणी को बल मिला है। 'हिमालय' कविता में क्रांति का स्पष्ट आभास मिलता है जहाँ वह शोषकों के साम्राज्य को ध्वस्त कर एक नए वर्गहीन समाज की स्थापना पर बल देते हैं। इस भावना का पुष्ट रूप उनका काव्य 'हुंकार' में देखने को मिलता है।

दिनकर जी प्रेम, राष्ट्रीयता एवं मानवता के कवि थे। उनकी कविताओं में जहाँ एक ओर प्रेम की भावनाओं

P. T. O

Scanned with CamScanner

का सुंदर चित्र देखने को मिलता है, दूसरी ओर राष्ट्रीयता का प्रश्न उनके लिए सर्वोपरि है। एक तरफ वह अतीत से प्रेरणा ग्रहण करते हैं तो दूसरी देश के भविष्य के लिए चिंतित दिखाई पड़ते हैं। प्रेम और सौंदर्य से अधिक महत्व उनके लिए यथार्थ और संघर्ष का था। उनकी कविताओं में वर्तमान भारत की समस्या के प्रति चिन्ता दिखाई देती है। धनिक और पूंजीपति वर्ग ने किस प्रकार हमारी संस्कृतिक विरासत को अपनी मुट्ठी में कर गरीब और असहाय जनता पर जुल्म करती है, ऐसे अवसर पर कवि के स्वर में आक्रोश का भाव आ जाता है और उनकी कविताओं में क्रांति के स्वर सुनाई पड़ने लगते हैं। —

स्वर को कराल हुंकार बना देता हूं
यौवन को भीषण ज्वार बना देता हूं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उनकी कविताओं में एक तरफ देश की सुंदरता को देखने की भावना है, दूसरी तरफ देश की परिस्थितियों के अनुसार उनमें गहरा आक्रोश और स्वाभिमान की भावना है। उनके इन्हीं गुणों के कारण उन्हें राष्ट्रवादी कवि भी कहा जाता है।

—

Scanned with CamScanner